International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

# प्राचीन भारतीय इतिहास के साहित्यिक स्रोत

Rajiv Maan
Lecturer in History
Department of Education, Haryana
E-mail: rajivmaan12@gmail.com

**शोध आलेख सार–** वस्तुतः प्राचीन भारतीय इतिहास में अनुसंधान कार्य को अमली जामा पहनाना अत्यंत ही दुष्कर कार्य है। कई बार पुरातात्विक प्रमाण इतने अधिक अस्पष्ट प्रवृति के होते हैं कि अनुसंधानकर्त्ता को अपनी मानसिक दृष्टि थोपने का अवसर प्राप्त हो जाता है और वह अपने कथ्य और मन्तव्य के समर्थन में उपलब्ध साक्ष्यों व प्रमाणों के साथ स्वयं की बात भी शामिल कर लेता है। यदि प्राचीन भारतीय इतिहास के पुरातात्विक स्रोतों तथा साहित्यिक स्रोतों में भेद किया जाये तो साहित्यक स्रोत भी कम महत्व के नहीं हैं। वैदिक युग से लेकर प्राचीन भारतीय इतिहास के सम्बन्ध में अनेकों साहित्यक ग्रंथ लिखे गए हैं। इस सम्बन्ध में धर्मशास्त्रों, अर्थशास्त्र, महाकाव्य, पुराण, अरबी व फारसी रचनाएं तथा चीनी यात्रियों के विवरण इस शोध पत्र में शामिल करते हुए शोध को गति दी गई है और उपलब्ध साहित्य के आधार पर ही शोध पत्र लिखा गया है तथा यह द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

**मूल शब्द–** वैदिक साहित्य, धर्मशास्त्र, महाकाव्य, पुराण, अरबी व फारसी रचनाएं।

**भूमिका–** वस्तुतः प्राचीन एवं मध्यकालीन अतीत के अध्ययन के लिए हमारे पास बड़ी मात्रा में विभिन्न प्रकार की समकालीन साहित्यक जानकारी उपलब्ध है।[1] चूंकि प्राचीन भारतीय इतिहास विविधता का गुण लिए हुए है और इसका एक बहुत बड़ा भाग काव्य, नाटक, आख्यान मूलक सर्जनशील रचनाओं से सम्बन्धित है। वस्तुतः अतीत के सम्बन्ध में इतिहासकार का ज्ञान विभिन्न साक्ष्यों पर निर्भर रहता है और उसे अपनी बात स्पष्ट करने के लिए किसी भी घटना के सम्बन्ध में स्पष्ट प्रमाण देना पड़ता है। यही कारण है कि प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन करने के लिए शोधकर्त्ता को बार–बार, शोध सामग्री के निर्देशन में रहना पड़ता है व उसका अध्ययन करना पड़ता है। सामान्य परिस्थिति में अधूरी तथा मनगढंत बात को अधिक महत्व नहीं मिलता और उसे अस्पष्ट मानकर अमान्य कर दिया जाता है। साहित्यिक स्रोतों से उपलब्ध जानकारी में भी

[1] उपिन्द्र सिंह, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, पृ0 30.

ऐतिहासिक घटनाओं का स्पष्ट निर्देश तो कम मिलता है, परन्तु हम इस बात को नहीं नकार सकते कि कोई भी साहित्यिक रचना समकालीन समाज, संस्कृति और राजनीति जीवन की उपेक्षा करके नहीं हो सकती। अतः आज सभी इतिहासकार सर्जनशील साहित्य का ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण युग विशेष के समाज एवं संस्कृति के विवेचन में रूचि लेकर प्रस्तुत कर रहे हैं।

**वैदिक साहित्य–** अधिकांश इतिहासकारों का मानना है कि वैदिक युग 1500ई0 पूर्व से 600ई0पू0 तक माना जाता है और इस युग में रचित साहित्य मूलरूप से धार्मिक और चिन्तनशील गुणों से युक्त हैं। अब्दुस्सलाम के अनुसार – ''इसके अन्तर्गत वेद तथा उससे सम्बन्धित ग्रन्थ पुराण, महाकाव्य स्मृति आदि हैं।''[2] चूंकि इस युग के साहित्य में स्पष्ट रूप से राजनैतिक घटनाओं पर प्रकाश नहीं डाला गया परन्तु यह साहित्य तत्कालीन समाज, आर्थिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था तथा सांस्कृतिक जीवन के बारे में पर्याप्त तथ्य प्रस्तुत करता है। इसमें ऋग्वेद को सर्वाधिक महत्व दिया गया है, जिसे भारत तथा यूरोपीय दोनों भाषाओं का सर्वाधिक प्राचीनतम ग्रन्थ होने का गौरव प्राप्त है।[3] वैदिक युग के आदिकाल को केवल इसी ग्रन्थ के आधार पर समझा जा सकता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि ऋग्वेदकालीन पुरातात्विक स्रोत सामग्री अत्यन्त कम है। तीन वैदिक संहिताओं (साम, यजुः तथा अथर्व), ब्राह्मण साहित्य आरण्यक तथा उपनिषद की रचनाएं ऋग्वेद के बाद की है, इसलिए ये सब उत्तरवैदिक साहित्य में शामिल की जाती हैं। पूर्व वैदिक काल की अपेक्षा, उत्तरवैदिक काल में जिस प्रकार का जीवन था उसके पर्याप्त प्रमाण परवर्ती वैदिक साहित्य में मिलते हैं। इस साहित्य में ब्राह्मणों की सामाजिक श्रेष्ठता का दावा किया गया है तथा यज्ञ पर आधारित ब्राह्मणों के पुरोहित बनने का एकाधिकार माना जाता है। भारतीय दर्शन में वैदिक साहित्य को आज भी सबसे अधिक उपयोगी और प्रमाणिक माना जाता है। जिस प्रकार पश्चिम एशिया के द्वितीय–तृतीय सहस्राब्दि ई0पू0 के साक्ष्यों में भारतीय शासकों के नाम मिलते हैं, उसी तरह ऋग्वेद में कुछ विदेशियों का भी उल्लेख है।[4]

**धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ–** धर्मशास्त्र का क्षेत्र व्याप्क होने के साथ–साथ काफी जटिल भी है। धर्मशास्त्रों में लोगों के सामाजिक, आर्थिक जीवन तथा राज्य संचालन से सम्बन्धित नियमों को शामिल किया

[2] अब्दुस्सलाम, भारतीय इतिहास, पृ0 4.
[3] गुणाकर मुले, भारतः इतिहास, संस्कृति और विज्ञान, पृ0 42.
[4] सुमन गुप्ता, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ0 3.

गया है। यदि प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन किया जाये तो तत्कालीन वर्ण व्यवस्था, जाति–व्यवस्था , विवाह प्रथा, नारी की सामाजिक स्थिति, शिक्षा व्यवस्था, कृषि, शिल्प, वाणिज्य व अन्य पेशों से सम्बन्धित नियम धर्मशास्त्रों में उल्लेखित हैं। इसके अतिरिक्त राजा के द्वारा राज्य का संचालन, राजतंत्रीय शासन व्यवस्था, मंत्रीगण, अमात्य आदि के राजकर्त्तव्य, राजस्व व्यवस्था, सैन्य संगठन, गुप्तचर व्यवस्था, विदेशी सम्बन्ध आदि के बारे में धर्मशास्त्रों में काफी जानकारी दी गई है। वैदिककाल से चली आ रही वर्णव्यवस्था को प्रतिष्ठित करने में धर्मशास्त्रों का विशेष योगदान रहा है। धर्मशास्त्रों को बाद में स्मृति ग्रन्थ की संज्ञा दी गई और इनमें मनु–स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, नारद स्मृति, का विशेष महत्व है। बाद में धर्मशास्त्रों की व्याख्याएं करके प्राचीनकाल के सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक जीवन पर प्रकाश डाला गया। अर्थशास्त्र की रचना करके कौटिल्य ने तत्कालीन राजनैतिक और आर्थिक जीवन पर व्यापक प्रकाश डाला। कौटिल्य ने अपनी इस रचना में वास्तविक बातों से राजा को परिचित करवाते हुए उपदेश दिया है।[5]

**महाकाव्य रचनाएं–** महाभारत और रामायण दोनों इस श्रेणी के ग्रन्थ हैं। महाभारत को 18 पर्वों से युक्त ग्रन्थ माना गया है। इसका रचनाकाल 400ई0पू0 से 400ई0 तक माना जाता हैं। ऐसा अनुमान है कि महाभारत की रचना करने में 800 वर्ष लगे होगें। रामायण के बारे में भी यह कहा जाता है कि इसकी रचना 4 शताब्दियों (200ई0पू0 से 200ई0 तक) में हुई। वस्तुतः ये महाकाव्य किसी एक व्यक्ति की उपज नहीं, वरन् विभिन्न कालों के लिए विभिन्न व्यक्तियों द्वारा परिणित हैं।[6] संस्कृत भाषा में रामायण को आदि काव्य कहा जाता है परन्तु रचना की दृष्टि से महाभारत सबसे प्राचीनतर ग्रन्थ है। इसकी मूलकथा कौरव और पाण्डवों के बीच प्रतिद्वन्दता तथा कुरूक्षेत्र का धर्मयुद्ध है। रामायण में अयोध्या के इक्ष्वाकु कुल के आदर्श राजा रामचन्द्र के शासन से सम्बन्धित क्रियाकलाप शामिल हैं। वस्तुतः ये दोनों महाकाव्य वीरगाथाएं हैं और ऐसे ग्रन्थ प्रायः चारण कवियों द्वारा भी लिखे गए हैं। कुछ इतिहासकार व्यास और वाल्मिकी को महाभारत और रामायण का प्रणेता न मानकर संकल्नकर्त्ता ही मानते हैं। भारतीय समाज और संस्कृति का वाहक होने के कारण रामायण और महाभारत को आज भी विशेष महत्व प्राप्त है।

[5] रणबीर चक्रवर्ती, भारतीय इतिहास का आदिकाल, पृ0 16.
[6] गजानन माधव मुक्तिबोध, भारतः इतिहास और संस्कृति, पृ0 43.

**पुराण साहित्य–** चूंकि पुराणों की संख्या 18 है और इनके रचनाकाल को लेकर भी साहित्यकारों में मतभेद है फिर भी इनके ऐतिहासिक महत्व को सभी साहित्यिक इतिहासकार स्वीकार करते हैं। वायुपुराण एवं विष्णुपुराण गुप्तशासन काल के चौथी व पांचवी शताब्दी में रचित हैं। पुराणों के अन्तर्गत वंशनुचरित के रूप में अत्यंत प्राचीन राजवंशों का उल्लेख होने के कारण प्राचीन भारत के राजनैतिक इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से इनका काफी महत्व है। सातवाहन नरेशों का जो परिचय अभिलेखों और मुद्राओं के माध्यम से ज्ञात होता है, उन राजाओं में से कई राजाओं के नाम पुरणों में उल्लेखित हैं। कई पुराणकारों ने स्वयं को भविष्यदर्शी के रूप में स्थापित करने का भी प्रयास किया है। पुराणों के ऐतिहासिक महत्व को सिद्ध करने के लिए एफ.ई. पार्जिटर ने विशेष अनुसंधान कार्य किया है, जिसको आधुनिक इतिहासकार विशेष महत्व देते हैं। स्कन्ध पुराण में पश्चिम भारत के सांस्कृति सामाजिक जीवन का विशेष परिचय दिया गया है। शिव पुराण तथा विष्णु पुराण में हिन्दू धर्म के देवी–देवताओं का उल्लेख मिलता है।[7] अंततः पुराणों के महत्व के बारे में आज भी कई इतिहासकार संशय उत्पन्न करते हैं और इन्हें कपोल कल्पना का नाम देते हैं।

**ऐतिहासिक व सृजनशील रचनाएं–** इस सम्बन्ध में बाणभट्ट की रचना हर्षचरित, बिल्हण की रचना विक्रमांकदेवचरित आदि तत्कालीन राजाओं क्रमशः हर्षवर्धन और राजा षष्ट विक्रमादित्य की गौरवगाथा बताती हैं। इसी तरह पालवंश के अंतिम राजा रामपाल के जीवन चरित्र के बारे में भी संध्याकर नन्दी के प्रसिद्ध ग्रन्थ रामचरितम में काफी कुछ कहा गया है। कल्हण ने राजतरंगिणी नामक रचना में कश्मीर के इतिहास पर प्रकाश डाला है। इसी तरह पाणिनी की विविध शास्त्रीय रचना अष्टाध्यायी पंचम शताब्दी ईस्वी पूर्व रचित महान रचना है।[8] कुछ इतिहासकार मानते हैं कि पंतजलि द्वारा रचित विख्यात टीका महाभाष्य संभवतः दूसरी शताब्दी ई0पू0 में लिखी गई। ज्योतिष्य शास्त्र के क्षेत्र में वराहमिहीर की रचना बृहत्संहिता भी बहुत महत्वपूर्ण है। इसी तरह चिकित्सा शास्त्र के क्षेत्र में चरक संहिता को एक उपयोगी रचना माना जाता है। अरबी व फारसी रचनाएं भी प्राचीन भारत के इतिहास के बारे में उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करती हैं। 711ई0 में सिंध पर जो पहला अरबी हमला हुआ उसका विवरण चाचनामा नामक ग्रन्थ में मिलता है। 822ई में

[7] रणबीर चक्रवर्ती, भारतीय इतिहास का आदिकाल, पृ0 18.
[8] वासुदेव अग्रवाल, पाणिनीकालीन भारतवर्ष, पृ0 2.

लिखित हुदुद–अल्–आलम् नामक फारसी ग्रन्थ भौगोलिक चर्चा के लिए प्रसिद्ध ग्रन्थ है जो व्यापारिक मार्गों पर प्रकाश डालता है।

**विदेशी चीनी यात्रियों के वृतान्त–** ऐसा माना जाता है कि प्राचीन भारत के सम्बन्ध में सबसे प्राचीन वृतान्त चीन के राजकर्मचारी चांग कियेन ने लगभग 125 ई0 पूर्व लिखा था। परन्तु यह बात भी स्वीकार की जाती है कि यह राजकर्मचारी भारत में नहीं आया था और भारत के सिंध क्षेत्र के सम्बन्ध में उसकी धारणा कई अन्य स्रोतों से उत्पन्न हुई थी। उसका दिया हुआ नाम ही बाद में तियान–झु नाम से प्रचलित हुआ और भारत को एक उपमहाद्वीप के रूप में चीन के लोग तियान–झु के नाम से जानने लगे। इसी समय चीन में बौद्ध धर्म भी लोकप्रिय होता चला गया और बहुत सारे चीनी यात्री भारत में आने लग गए। उनका भारत आगमन का उद्देश्य बौद्ध धर्म एवं दर्शन के अध्ययन की इच्छा से तथा बौद्ध ग्रन्थों की प्रतिलिपि करके चीन ले जाना था।[9] इन चीनी यात्रियों में प्रमुख रूप से फाहयान, तथा हयूनसांग का नाम प्रसिद्ध है। फाहयान 399ई0 से 414ई0 के बीच भारत भ्रमण पर आया तथा उसके बाद हयूनसांग 629ई0 से 645ई0 तक भारत भ्रमण पर रहा। इन चीनी यात्रियों में 675ई0 से 695ई0 तक भारत भ्रमण पर आने वाले चीनी यात्री इत्सिंग का नाम भी प्रसिद्ध है। यदि इन चीनी यात्रियों द्वारा लिखित तत्कालीन भारतीय जीवन के वृतान्तों का अध्ययन किया जाये तो 5वीं से 7वीं शताब्दी तक के समय में भारत में बौद्ध धर्म की स्थिति को समझना काफी आसान है। चूंकि भारतीय राजाओं के संरक्षण में बौद्ध धर्म काफी विकसित हुआ जो बाद में ब्राह्मण धर्म को राजकीय संरक्षण प्राप्त होने पर पतन की दिशा में अग्रसर हुआ।[10] फिर भी हयूनसांग के वृतांत बौद्ध धर्म के साथ–साथ भारतीय जीवन के अन्य पक्षों पर भी प्रकाश डालते हैं। वह भारत के जिस भी स्थान पर गया, वहां की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, आर्थिक जीवन, राजनैतिक जीवन, धार्मिक जीवन आदि पर भी उसने व्यापक चर्चा की और उन्हें वृतान्तों के रूप में लिखा जो प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन करने में अहम् भूमिका अदा करते हैं।

[9] उपिन्द्र सिंह, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, पृ0 32.
[10] प्रशान्त गौरव, प्राचीन भारत– लगभग 600ई0 तक, पृ0 160.

**सारांश–** इस प्रकार प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्ययन करने के लिए स्रोत सामग्री के रूप में साहित्यिक ग्रन्थों का अपना विशेष महत्व है। चूंकि कुछ साहित्यक रचनाएं निर्विवाद महत्व की हैं, फिर भी कुछ प्राचीन ग्रन्थ कल्पना का भी सहारा लिये हुए हैं। वास्तव में जब प्राचीन इतिहास का अध्ययन करने के लिए कोई ठोस पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध न हो तो ऐसी स्थिति में कल्पना ही एकमात्र उपाय बचती है। परन्तु इतिहासकार अनुसंधान कार्यों में कल्पना की बजाय ठोस प्रमाण को अधिक महत्व देते रहे हैं और यही उनका अनुसंधान धर्म भी है। उनके महत्वपूर्ण योगदान के कारण ही आज प्राचीन भारतीय इतिहास के बारे में काफी महत्वपूर्ण जानकारी वर्तमान पीढी को उपलब्ध हुई है और वर्तमान अनुसंधान कार्यों को गति भी मिली है। जहां वेदकालीन समाज के बारे में कोई ठोस पुरातात्विक जानकारी नहीं है, वहां ऋग्वेद जैसा साहित्य आज भी काफी प्रमाणित माना जाता है।

## सन्दर्भ सूची–

1. शिवदत्त ज्ञानी, वेदकालीन समाज, चौखम्बा प्रकाशन वाराणासी, 1967.
2. धर्मपाल अग्रवाल एवं पन्नालाल अग्रवाल, भारतीय पुरैतिहासिक पुरातत्व, उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ, 1975.
3. सुमन गुप्ता, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, स्वामी प्रकाशन जयपुर, 2000.
4. रोमिला थापर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास , ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली, 2001.
5. डी.एन.झा, प्राचीन भारतः एक रूपरेखा, मनोहर पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2005.
6. प्रशान्त गौरव, प्राचीन भारत– लगभग 600ई0 तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009.
7. कैलाश खन्ना, प्राचीन भारत का इतिहास, भाग–1, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2010.
8. बी.स्टेन, ए हिस्ट्री ऑफ इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, नई दिल्ली, 2012.
9. ए.एस.डूडी, एन्सियंट हिस्ट्री ऑफ इंडिया, नेहा पब्लिशर्स , दिल्ली, 2012.
10. रणबीर चक्रवर्ती, भारतीय इतिहास का आदिकाल– प्राचीनतम पर्व से 600ई0 तक, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, दिल्ली, 2012.
11. अबुस्सलाम, भारतीय इतिहास, शिवांक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012.
12. गुणाकर मुले, भारतः इतिहास, संस्कृति और विज्ञान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

13. गजानन माधव मुक्ति बोध, भारतः इतिहास और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 2014.
14. वासुदेव अग्रवाल, पाणिनीकालीन भारतवर्ष, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणासी, 2014.
15. उपिन्द्र सिंह, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, पीयरसन ऐजुकेशन दिल्ली, 2017.